एक छोटा सा घर

वर्जिनिया, हिंदी : विदूषक

एक छोटा सा घर

वर्जिनिया, हिंदी : विदूषक
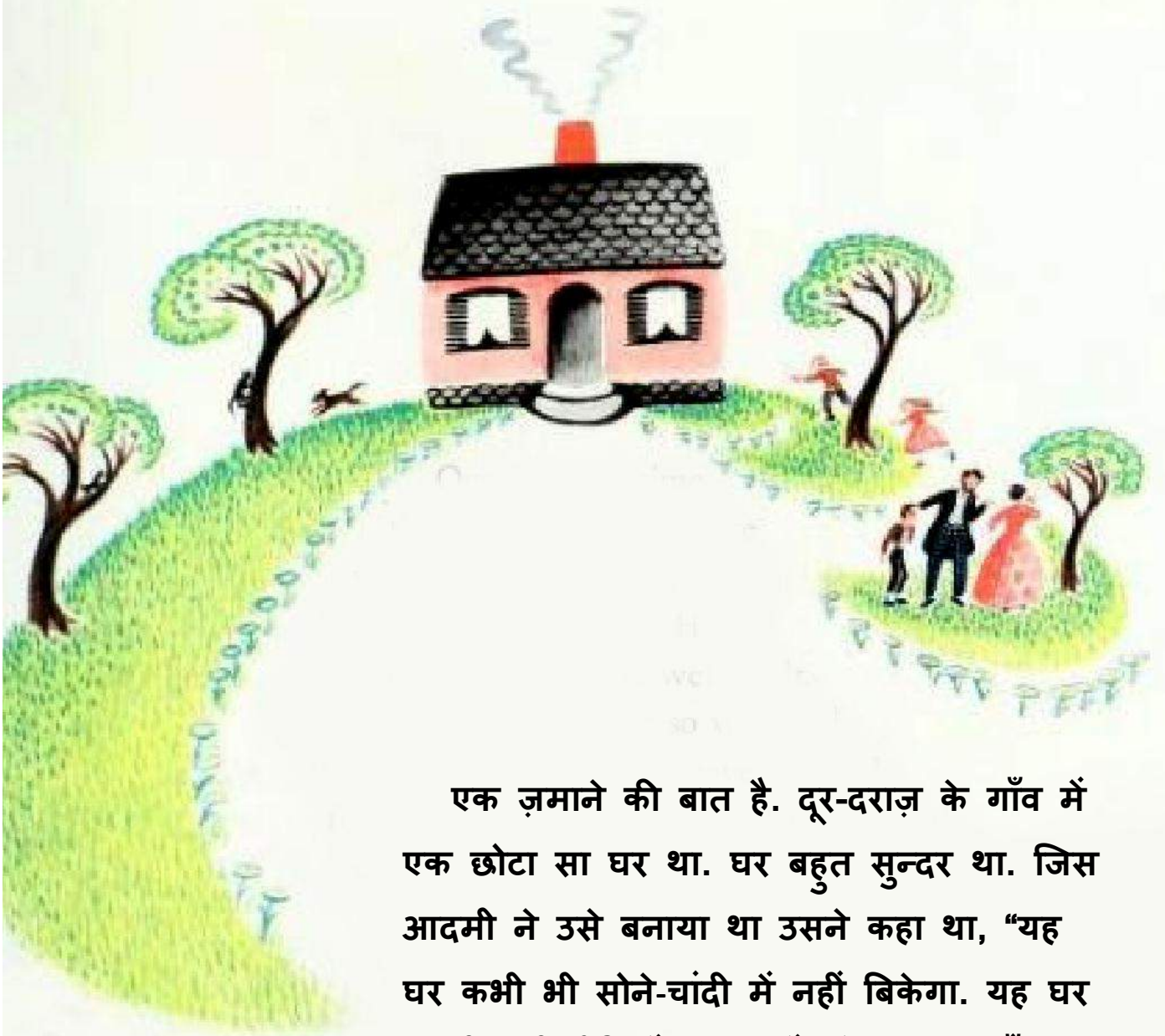
एक ज़माने की बात है. दूर-दराज़ के गाँव में एक छोटा सा घर था. घर बहुत सुन्दर था. जिस आदमी ने उसे बनाया था उसने कहा था, “यह घर कभी भी सोने-चांदी में नहीं बिकेगा. यह घर हमारी कई पीढ़ियों के बच्चों को अपने यहाँ रहते हुए देखेगा.”

वो छोटा घर एक पहाड़ी पर बना था. घर बहुत खुश था. वो अपने आसपास के मैदानों को निहारता था. सुबह के समय वो सूरज को उगते देखता और शाम को उसे ढलते हुए. इस तरह उसके दिन बीतते. हर दिन पहले के दिनों से कुछ अलग होता. पर वो छोटा घर बिल्कुल वैसा ही रहा जैसा वो पहले था.
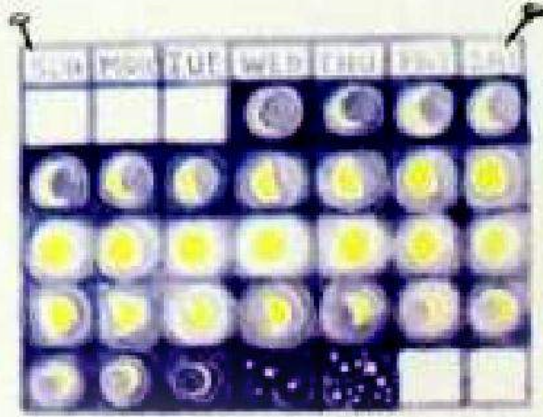
रात के समय घर, चाँद को धीरे-धीरे पतले से मोटे होते हुए देखता, और फिर उसे दुबारा पतला होते हुए देखता. जब रात को चाँद नहीं होता तो फिर वो तारों को निहारता. पहाड़ी पर से घर को दूर शहर की रोशनियाँ भी दिखाई देती थीं. छोटे घर को शहर के बारे में बहुत उत्सुकता थी.

वो अक्सर अचरज करता - शहर में रहना कैसा होगा?

छोटा घर बदलते मौसम के रंगों को देखता और उसमें उसका समय बीतता. वसंत के लम्बे होते दिनों में जब सूरज ज्यादा गर्म होता तो घर दक्षिण से पलायन करके आई पहली रोबिन चिड़िया का इंतज़ार करता. वो घास को भूरी से हरी होते हुए देखता. वो कलियों को खिलते हुए और सेब के फूलों को मुस्कुराते हुए देखता. वो पास की छोटी नदी में बच्चों को खेलते हुए देखता.

गर्मी के लम्बे दिनों में घर, धूप सेंकता और पेड़ों को नए पत्ते पहनते हुए निहारता. उस समय सफ़ेद डेज़ी के फूलों से पूरी पहाड़ी लद जाती. वो बाग़ को फलते-फूलते देखता. वो सेबों को लाल होते और पकते हुए देखता. वो बच्चों को ताल में तैरते हुए देखता.

पतझड़ के मौसम में दिन छोटे होते और रातें ठंडी होतीं. तब पेड़ पहली पत्तियों को पीले, नारंगी और लाल रंगों में बदलते हुए देखता. वो लोगों को फसल काटते और सेब तोड़ते हुए देखता. वो बच्चों को स्कूल वापिस जाते हुए देखता.

सर्दियों में जब रातें लम्बी और दिन छोटे होते, तब सब तरफ सफ़ेद स्नो फैल जाती. तब घर बर्फ पर, बच्चों को फिसलते और स्केटिंग करते देखता. इस तरह एक साल बीतता और दूसरा आता. पुराने सेब के पेड़ अब बूढ़े हो चले थे और उनकी जगह नए सेब के पेड़ लगाए जा रहे थे. बच्चे अब बड़े होकर शहर में जाकर बसे गए थे. घर को अब शहर की रोशनी ज्यादा चमकीली और नज़दीक नज़र आती थी.

एक दिन घर को एक गाड़ी गाँव की टेढ़ी-मेढ़ी सड़क से आती हुई दिखाई दी. कुछ देर में वैसी कई और गाड़ियाँ आईं. उनमें से बस कुछ ही गाड़ियों को घोड़े खींच रहे थे. कुछ देर बाद सर्वे करने वाले इंजिनियर आए और उन्होंने छोटे घर के सामने एक लाइन खींची. फिर एक स्टीम शवेल आया और उसने डेज़ी से ढंकी पहाड़ी पर एक सड़क खोदी. कुछ ट्रक पत्थर, और कुछ ट्रक कोलतार और रेत लेकर आए. सबसे आखिर में रोड-रोलर आया और उसने सड़क को समतल और चिकना बनाया.

उसके बाद छोटा घर, दिन भर ट्रकों और मोटरकारों को, गाँव से शहर जाते हुए देखता. नई सड़क के साथ में आए - नए पेट्रोल पम्प, ढाबे, होटल और छोटे-छोटे घरों की कतारें. पहले के मुकाबले अब हर चीज़ बहुत तेज़ गति से हो रही थी.

फिर और सड़कें बनीं. कुछ समय बाद गाँव अलग-अलग मोहल्लों और बस्तियों में बंट गया. नए घर बने, और बड़े-बड़े घरों का निर्माण हुआ. फिर उस इलाके में स्कूल, दुकानें और गैरिज फ़ैले और उन्होंने उस छोटे घर को, चारों तरफ से घेर लिया. अब कोई भी उस छोटे घर में रहना नहीं चाहता था और ना ही कोई उसकी देखभाल करना चाहता था. घर को सोने-चांदी में खरीदने को भी कोई तैयार नहीं था. घर के पास कोई चारा नहीं था – वो वहीँ खड़ा रहा और बदलते नज़ारे का जायजा लेता रहा.

अब वहां रात के समय न तो शांति थी और न ही चैन. शहर की चकाचौंध करने वाली रोशनी अब और करीब आ गई थी. रात भर सड़कों पर लाइट के बल्ब जगमगाते थे. “यह तो बिल्कुल शहर में रहने जैसा हुआ,” छोटे घर ने सोचा. छोटे घर को यह सब अच्छा लगा, या नहीं यह उसे भी नहीं पता था. छोटे घर को डेज़ी फूलों के मैदान, और चांदनी रात में सेब के पेड़ के लहलहाने की बहुत याद आती थी.
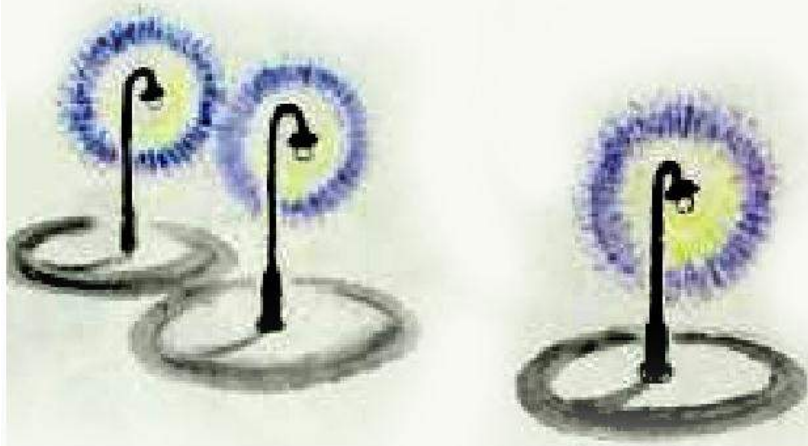
कुछ समय बाद छोटे घर के सामने से ट्राम गाड़ियाँ चलने लगीं. वो न सिर्फ दिन में चलतीं पर रात में भी लोगों को, इधर-उधर ले जातीं. अब हर कोई व्यस्त लगता और अपनी मंजिल तक पहुँचने की जल्दी में होता.
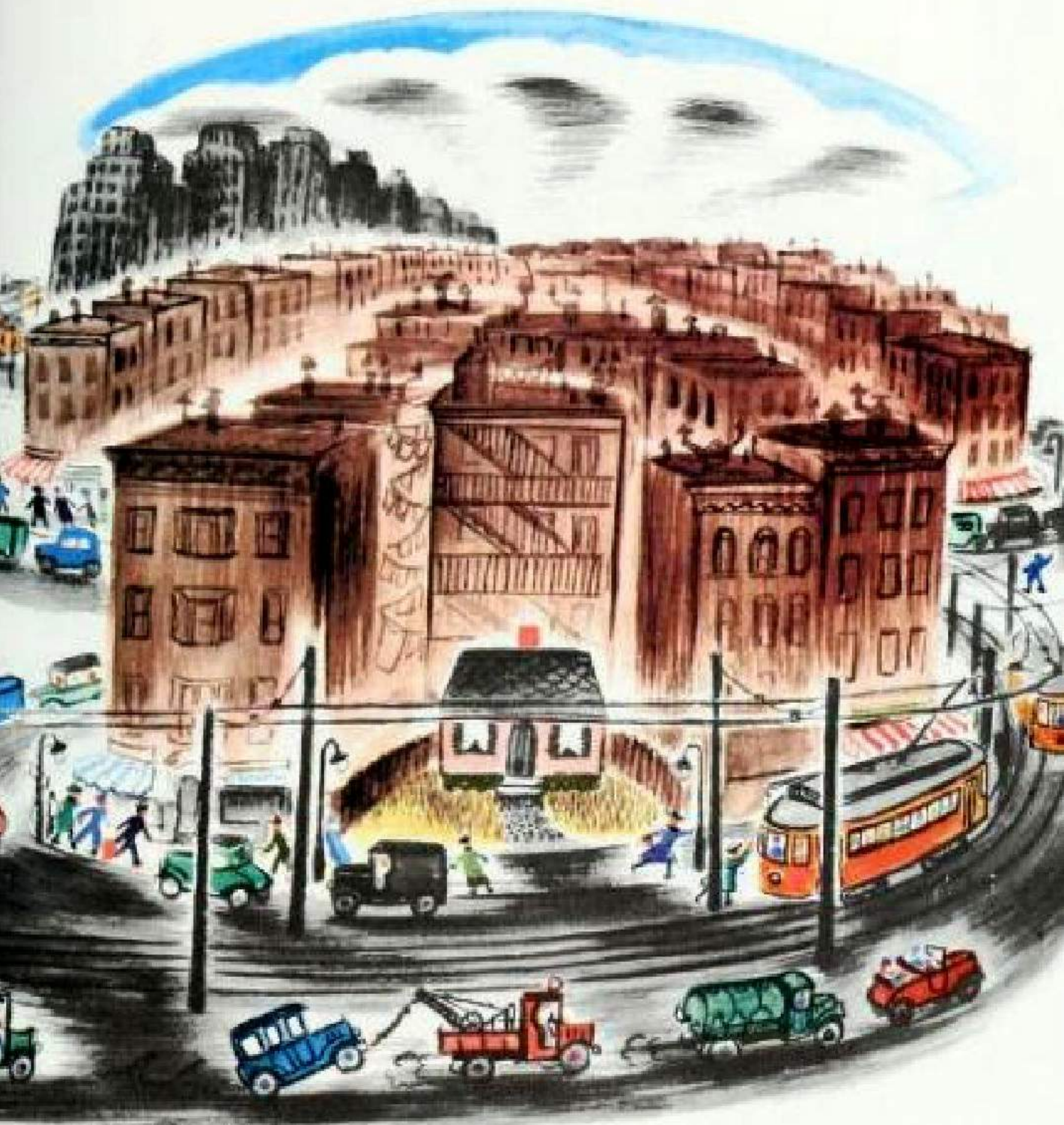
कुछ ही दिनों में छोटे घर के ऊपर एक ट्रेन लाइन बिछ गई. उसके कारण अब हवा, धुएं और धूल से भर गई. जब इंजन अपने साथ पूरी ट्रेन को लेकर दौड़ता तो उससे बहुत शोर होता और बेचारा छोटा घर कांपने लगता. वसंत, गर्मी, पतझड़ और सर्दी कब आती और कब जाती इसका छोटे घर को कुछ पता ही नहीं चलता. अब सभी मौसम उसे एक-जैसे लगने लगे थे.
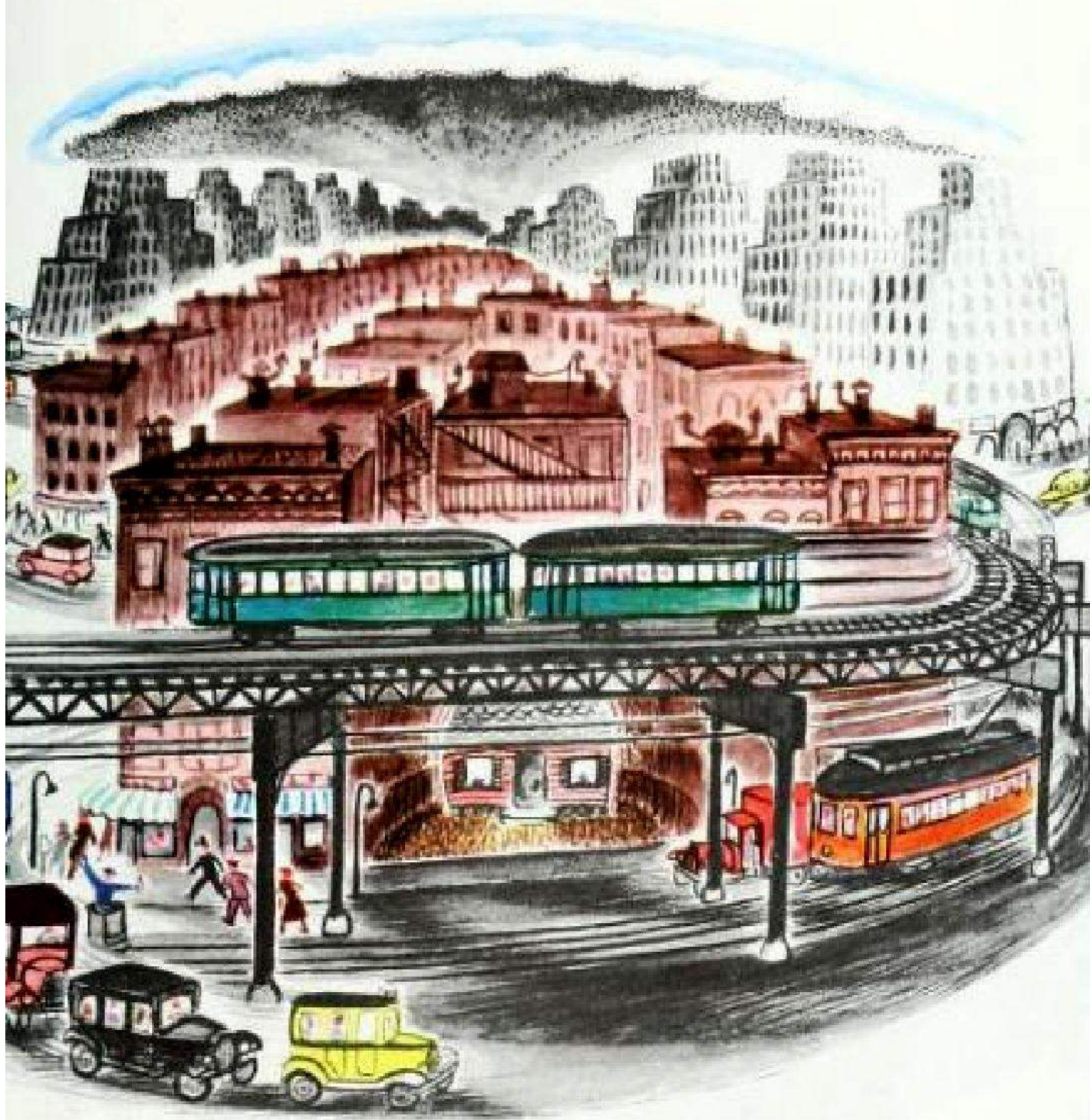
फिर कुछ समय बाद छोटे घर के नीचे से एक अंडरग्राउंड ट्रेन शुरू हुई. छोटा घर उसे देख तो नहीं पाया पर वो उसकी आवाज़ सुनता और उसके कम्पन को महसूस करता था. लोग अब बहुत तेज़ी से यात्रा करते. अब कोई भी उस छोटे घर को देखता तक नहीं था. लोग बिना नज़र डाले उसके पास से निकल जाते थे.
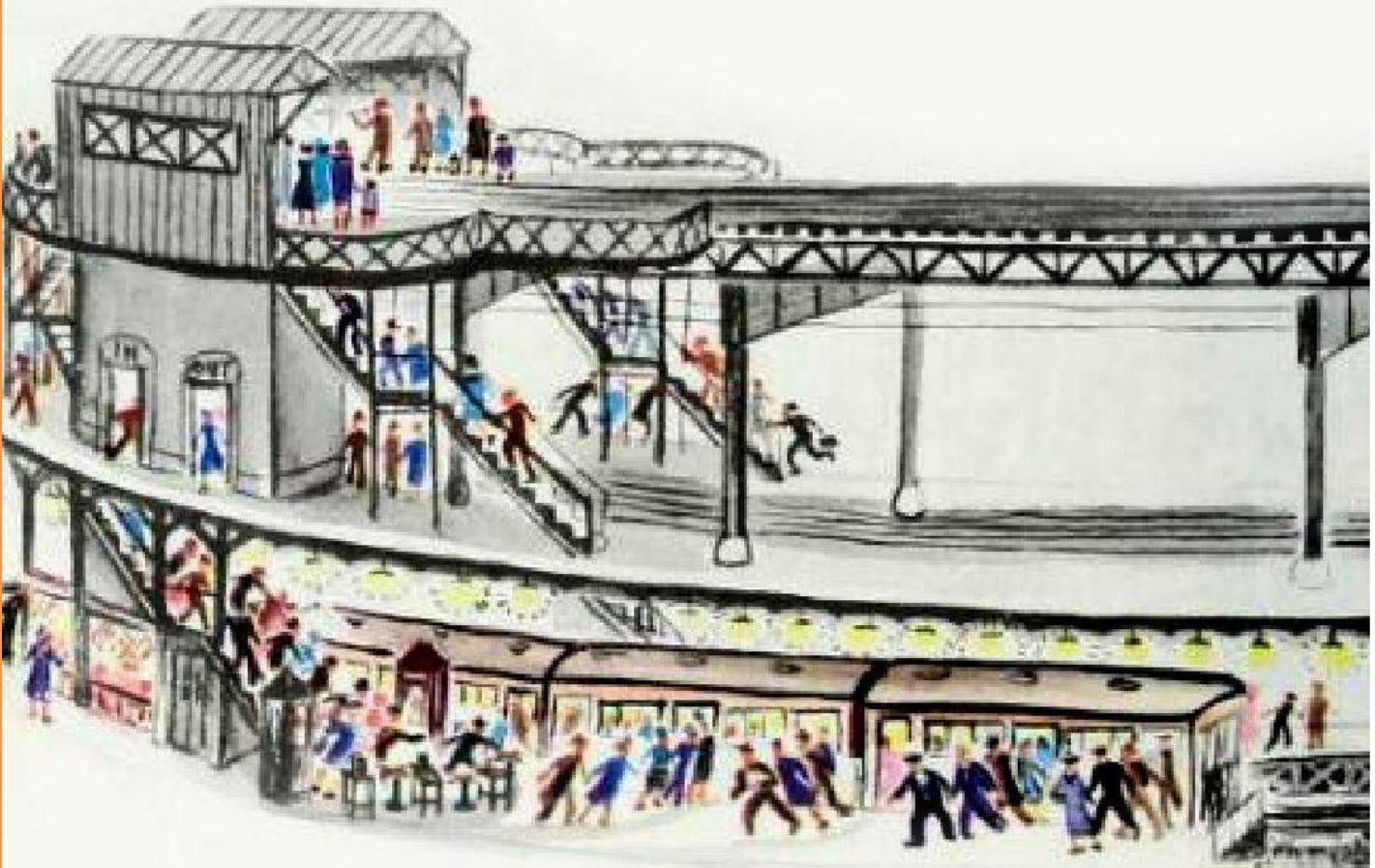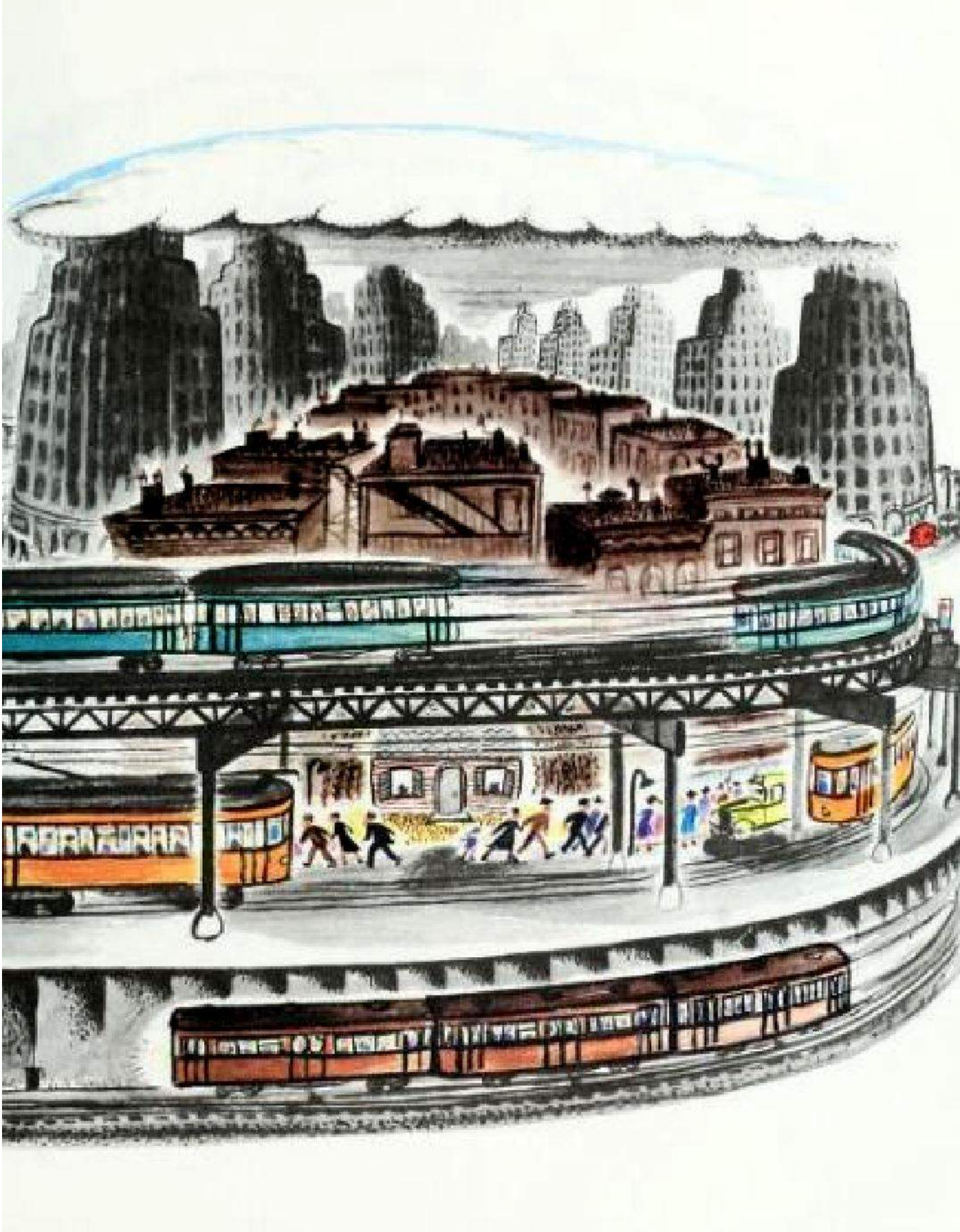
कुछ समय बाद छोटे घर के आसपास सभी एक-मंजिल वाले छोटे घरों को ढहा दिया गया और उनकी जगह पर ऊंची-ऊंची, मल्टी-स्टोरी अट्टालिकाओं का निर्माण हुआ. उसके लिए पहले एक तरफ फाउंडेशन के लिए तीन-मंजिल गहरा गड्ढा खोदा गया, दूसरी तरफ चार-मंजिल गहरा गड्ढा खोदा गया. फिर एक ओर पच्चीस मंजिली इमारत बनी और दूसरी तरफ पैंतीस मंजिली!

अब छोटे घर को सिर्फ दोपहर का सूरज ही दिखाई देता था. शहर की प्रचंड रोशनी के कारण अब उसे रात को चाँद-तारे नहीं दिखते थे. रात के समय घर को अपने पुराने दिनों की याद सताती थी – जब उसके चारों ओर डेज़ी फूलों के मैदान थे, जब सेब के लहलहाते पेड़ चांदनी रात में थिरकते थे.
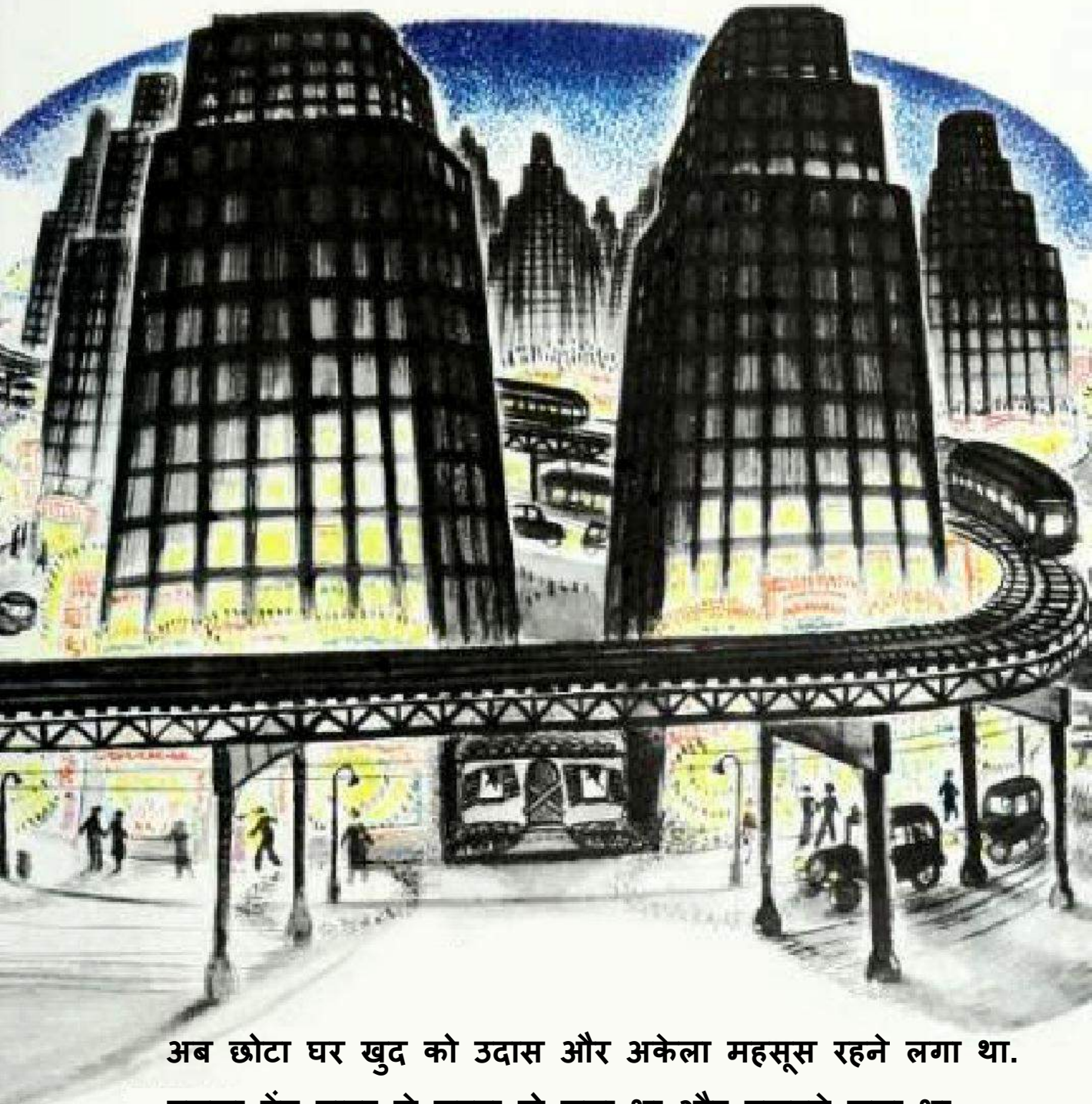
अब छोटा घर खुद को उदास और अकेला महसूस रहने लगा था. उसका पेंट बाहर से गन्दा हो गया था और उखड़ने लगा था. खिड़कियों के कांच टूट गए थे और पल्ले कब्जों से निकलकर टेढ़े होकर लटकने लगे थे. छोटा घर अब बाहर से भद्दा लगने लगा था. वैसे अन्दर से वो अभी भी एक अच्छा घर था.

फिर वसंत में एक दिन, उस मज़बूत छोटे घर को बनाने वाले आदमी की पर-पोती वहां आई. उसे बाहर से घर भद्दा ज़रूर लगा पर फिर भी वो उसके सामने खड़ी रही. घर में कुछ ऐसी बात थी जिससे वो उसके सामने रुकी और उसने उसे निहारा. फिर उसने अपने पति से कहा, "यह छोटा घर तो मुझे बिल्कुल वैसा लगता है जिसमें कभी मेरी दादी बचपन में रहती थीं. वो घर उस समय एक दूर-दराज़ के गाँव में था. घर एक पहाड़ी पर था और पहाड़ी डेज़ी के फूलों से लदी थी. घर चारों ओर सेब के पेड़ों से घिरा था."
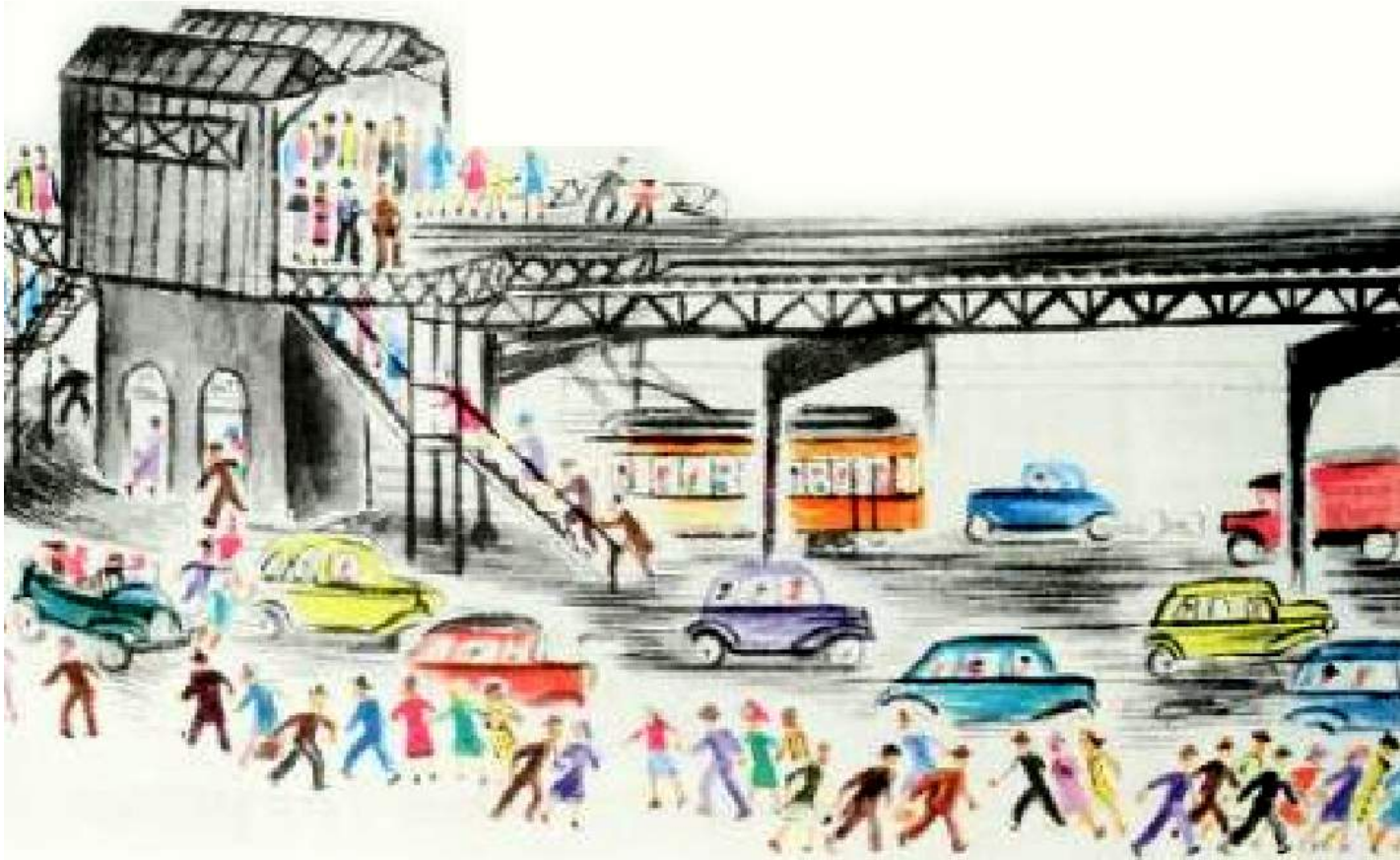
मालूमात के बाद उन्हें पता चला कि वो वही छोटा घर था. उसके बाद वे लोग घर ढोने वालों के पास गए. उन्होंने पूछा कि क्या वो उस घर को कहीं और ले जा सकते थे. घर ढोने वालों ने मुआयना करने का बाद कहा. “वो छोटा घर इतना मज़बूत है कि उसे ढोकर कहीं भी ले जाया जा सकता है.” फिर उन्होंने उस छोटे घर को उठाकर पहियों पर रखा और वो उसे शहर के बाहर ले गए.
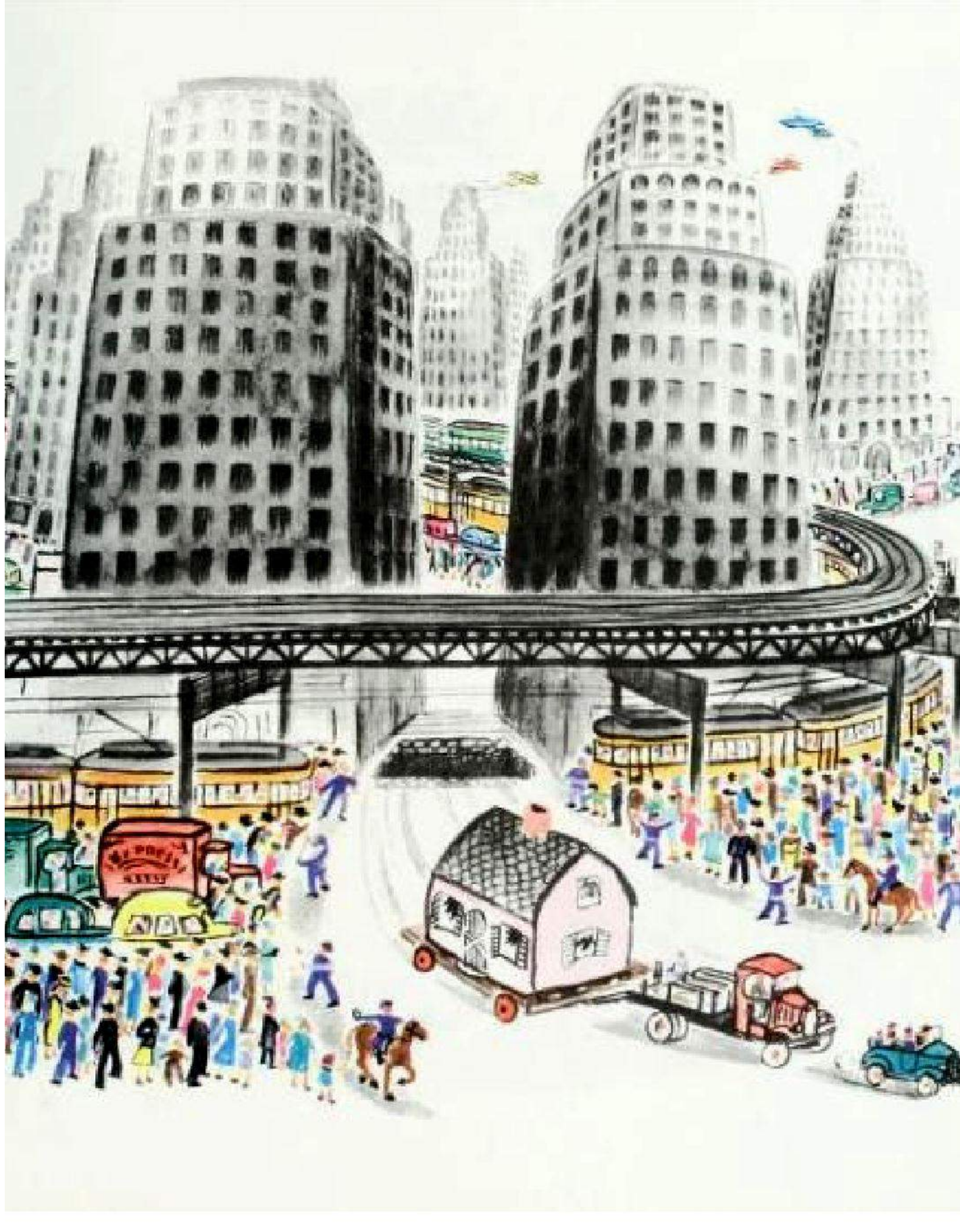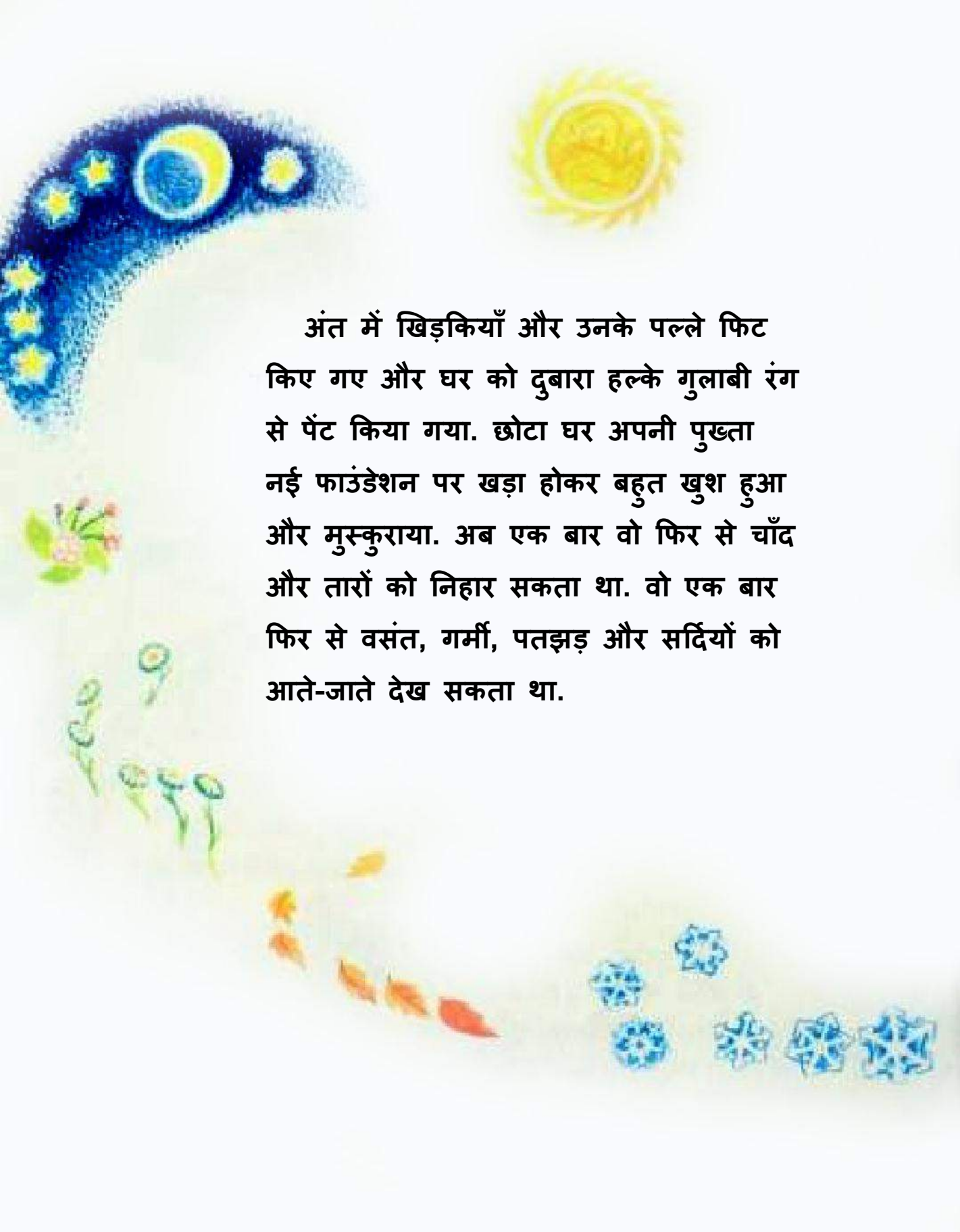
पहले तो छोटे घर को कुछ डर लगा. पर बाद में वो उसका आदी हो गया और उसे अच्छा लगने लगा. पहले छोटा घर, बड़ी हाईवे पर चला और फिर छोटी, सकरी सड़कों पर. कुछ घंटों बाद वो शहर से बहुत दूर एक खुले इलाके में पहुंचा. जब छोटे घर को हरी घास दिखी, और चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई दी तो उसका सब दुःख रफूचक्कर हो गया. लेकिन बहुत आगे जाने पर भी उन्हें घर के लिए कोई उपयुक्त जगह नहीं मिली.

उन्होंने घर को पहले एक जगह और फिर दूसरी जगह रखने की कोशिश की. अंत में उन्हें एक खेत के बीच में एक पहाड़ी दिखी जिसके चारों ओर सेब के पेड़ थे.

तब उस पर-पोती ने कहा, "यह छोटे घर के लिए एकदम बढ़िया जगह है." "बिल्कुल ठीक," छोटे घर ने खुद से कहा. फिर पहाड़ी के ऊपर खुदाई हुई और छोटे घर को वहां स्थापित किया गया.

अंत में खिड़कियाँ और उनके पल्ले फिट किए गए और घर को दुबारा हल्के गुलाबी रंग से पेंट किया गया. छोटा घर अपनी पुख्ता नई फाउंडेशन पर खड़ा होकर बहुत खुश हुआ और मुस्कुराया. अब एक बार वो फिर से चाँद और तारों को निहार सकता था. वो एक बार फिर से वसंत, गर्मी, पतझड़ और सर्दियों को आते-जाते देख सकता था.

एक बार फिर से उस छोटे घर में कोई रह रहा था और उसकी देखभाल कर रहा था.

अब छोटा घर, शहर के बारे में कुछ भी जानने को उत्सुक नहीं था.

वो शहर में कभी नहीं रहना चाहता था.

अब उसके ऊपर आसमान में, तारे चमक रहे थे ...

नया चाँद उससे अठखेलियाँ कर रहा था ....

वसंत का मौसम था ....

और उसके आसपास अपार सकून और शांति थी.